RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-1
Issue-2
February-2016

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com

प्रभा खेतान : अनूठी दास्तान

डॉ0 रतन कुमारी वर्मा

एसोसिएट प्रोफेसर हिन्दी विभाग, जगत तारन गर्ल्स डिग्री कालेज, इलाहाबाद

प्रभा खेतान हिन्दी साहित्य जगत की नयी राह की अन्वेषी हैं। वह एक प्रतिष्ठित रचनाकार, सजग स्त्रीवादी चिंतक, संवेदनशील कवयित्री, समाजसेविका एवं सफल उद्यमी महिला थीं। दर्शनशास्त्र, समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र, विश्व बाजार एवं उद्योग जगत की विशेषज्ञ थीं। 1 नवम्बर 1942 को जीवन में पदार्पण करने वाली प्रभा खेतान का देहावसान 20 सितम्बर 2008 ई0 को हुआ। शोधकार्य उन्होंने दर्शनशास्त्र में किया। इस कालखण्ड में उन्होंने अपनी विभिन्न प्रकार की रचनाओं से साहित्य जगत को समृद्ध किया। जितनी अच्छी प्रकड़ उनकी साहित्य पर थी, उससे भी कहीं ज्यादा एक चिंतक, विचारक, अनुवादक, सम्पादक के रूप में भी अनूठा कार्य किया।

प्रभा खेतान को सबसे अधिक प्रतिष्ठा उन्हें अपनी आत्मकथा 'अन्या से अनन्या' के माध्यम से मिली। लेकिन 'अन्या से अनन्या' की दासतान सामने आने के पूर्व उन्होंने अपने संवेदनशील मन के विचारों की अभिव्यक्ति विभिन्न माध्यमों से की। उनमें से कुछ रचनायें विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं– 'आओ पेंपे घर चलें'। 'छिन्तमस्ता', 'पीली आँधी', 'अग्निसंभवा', 'तालाबंदी', अपने–अपने चेहरे उनके प्रसिद्ध उपन्यास हैं। वह एक संवेदनशील कवयित्री भी थीं। कविता को भी उन्होंने अपना माध्यम बनाया। 'अपरिचित उजाले', 'सीढ़ियाँ चढ़ती हुई मै', 'एक और आकाश की खोज में', 'कृष्णधर्मा मैं', 'अहल्या', 'हुस्नबानो और अन्य कवितायें' में उनकी कवितायें संग्रहीत हैं। चिन्तनपरक रचनाओं में मुख्य कृतियाँ हैं– 'चिंतन : उपनिवेश में स्त्री', 'सार्त्र का अस्तित्त्ववाद', 'शब्दों का मसीहा : सार्त्र', 'अल्बेयर कामू : वह पहला आदमी'। उन्होंने अनुवाद के क्षेत्र में भी काम किया। अनुवाद : साँकलों में कैद कुछ क्षितिज (कुछ दक्षिण अफ्रीकी कवितायें), उनके अनुवादों में सबसे उल्लेखनीय कार्य है– 'सीमोन द बोउवार' की विश्व प्रसिद्ध कृति 'द सेकेण्ड सेक्स का 'स्त्री : उपेक्षिता' के रूप में हिन्दी में अनुवाद, सम्पादन के क्षेत्र में भी प्रशंसनीय कार्य किया। 'एक और पहचान', 'हंस' का स्त्री विशेषांक 'भूमण्डलीकरण : पितृसत्ता के नये रूप', 'बाजार के बीच : बाजार के खिलाफ'। इन क्षेत्रों में उन्हें महारत हासिल थी। इनमें सबसे बड़ी चीज है उनका साहस, उनकी निर्भीकता, नवीन सोच, परम्परागत पितृसत्ता, पतिसत्ता के खिलाफ चुनौती के रूप में अपने जीवन का प्रयोग, जो उन्हें विशिष्ट बनाती है, दूसरों से अलग पहचान देती है।

प्रभा खेतान जी को उनकी रचनाओं के माध्यम से, रचनाओं में अभिव्यक्त विचारों के माध्यम से आसानी से समझा जा सकता है। प्रभा खेतान जी की विचारधारा में ऐसी क्या बात है, जो उन्हें दूसरों से अलग पहचान मिली है। वैसे तो प्रत्येक साहित्यकार के पास स्वतंत्र सोच होती है और जो साहित्यकार आने वाले समय को पढ़कर उसको अपनी रचना में स्थान देता है, ऐसी रचनायें ही कालजयी रचनायें बन जाती है। जिस समय प्रभा खेतान जी लिख रही थीं, उस समय समाज को उनकी विचारधारा स्वीकार्य नहीं थी। लेकिन यह बात भी उतनी ही विशिष्ट है कि प्रभा खेतान जी को भी उस समय में समाज, समाज के लोगों की परवाह नहीं थी। वह स्वयं इसे स्वीकार करती हैं। कहती भी हैं। अपने कविता संग्रह 'अपरिचित उजाले' के समर्पण में स्वयं इसके उद्देश्यों पर प्रकाश डालती हुई लिखती हैं– ''साहित्य के किसी भी वाद या नारेबाजी से मेरा सम्पर्क नहीं है, न ही मैं साहित्य के प्रति प्रतिबद्ध हूँ। कविता मेरी जरूरत है, एक रिलीज़, मेरे व्यक्तित्व की एक अभिव्यक्ति। इसके प्रकाशन के पीछे मेरी केवल एक यही इच्छा है कि मैं उन सबके साथ जो मेरी ही तरह साधारण हैं; कुछ अपनी बातें कर सकूँ। मैं किसी भी पीढ़ी से सम्बन्धित नहीं। एक व्यक्ति की हैसियत से, उसकी अपनी भावानात्मक जरूरतों के हिसाब से लिखी गई ये कविताएँ, उन सबके लिए हैं जो एक तरह से असाहित्यिक हैं, जो साहित्य की दुनिया में भय से कदम नहीं रखते, पर जो जीवन के प्रति कवि–दृष्टि रखते हैं और कविता से कभी–कभी संवाद भी कर लेते हैं। वैसे ही साधारण और असाहित्यिक लोग मेरे साथ रहे हैं, उसी खेमे को ये कविताएँ समर्पित हैं।''[1] प्रभा जी की इस घोषणा से साफ हो जाता है कि साहित्य का जो सामाजिक धरातल है, उनको उसकी परवाह नहीं है। उनकी अपनी कविताओं के पाठक भी विशिष्ट हैं। सामान्य कहते हुए भी वे सामान्य नहीं है अपितु सामान्य से ज्यादा असामान्य है। प्रभा जी का बौद्धिक धरातल समाज की बनी–बनाई सीकचों को स्वीकार करने को तैयार नहीं है। वह अपनी भावनाओं को उन्मुक्त ढंग से अभिव्यक्त कर मुक्ति को तलाशती हुई नजर आती हैं। 'अहल्या' कविता संग्रह में व्यक्त किये गये विचार भी इसी आशय का संकेत देते हैं– ''मैंने यह कविता कुछ विशिष्ट बुद्धजीवियों के लिए नहीं लिखी। उन गिने–चुने लोगों का मेरे जीवन में कोई स्थान नहीं है और न ही यह कविता जन के नाम पर हॉकी जाती उस भीड़ के लिए है, जो आज की

© RRIJM 2015, All Rights Reserved

राजनीति के बदलते पैंतरों में बिल्कुल अमूर्त हो गई है। हम किसे कहते हैं जन? क्या उसे ही, जो खिलौना बनकर रह गया है, इन खुशामदी अफलातूनी राजनीतिक कठमुल्लों के हाथ? ये सारी अमूर्ततायें प्रेरित कर सकती हैं किसी जनोत्तेजना को, लेकिन मेरा इसमें विश्वास नहीं। यह कविता जन्मी किसी खास घटना की वजह से। यह काफी दिनों से मेरे जेहन में थी। पहले मुझे भय भी लगा कि यह क्या है ठोस पथरीला, जो एक बोझ की तरह दिल पर वजन डाले जा रहा है? मैंने इसे भूलने की कोशिश की। कुछ महीनों बाद, शायद, साल–भर बाद मैंने सोचा इसे शब्दों में उतारूँ। इस पर कुछ लिखूँ। क्या नाटक? कहानी? नहीं, यह धटना कविता बनकर उभरी।''[2] कविता लिखने के अपने कारण को वह स्वयं अपने स्पंदन में ढूँढ़ती हैं। अपनी अनुभूतियों, घटनाओं को बेबाक ढंग से कविता के माध्यम से प्रस्तुत करती हैं। आम बौद्धिक कहलाने वाले लोगों की उन्हें परवाह नहीं है। यह वह पहले ही स्पष्ट कर देती हैं ताकि उन्मुक्त ढंग से अपने विचारों को कविता में प्रकट कर सकें। वह ऐसा करती भी हैं। कविता संग्रह– 'कृष्ण धर्मा मैं' में कहती हैं– ''मेरी इस पूरी कविता में कृष्ण मौजूद हैं, उनकी मौजूदगी उस कौंध की मौजूदगी है जो कभी दिखती है कभी नहीं दिखती, मगर लापता कभी नहीं होती। हाँ यह भी सच है कि मेरे पास ऐसा कोई विजन नहीं, बस कहीं कुछ आत्मा की गहराई में जरूर घटा कि अपने वैयक्तिक अनुभवों का अतिक्रमण करते हुए मैंने खुद यह राह चुनी; उस आग को कुरेदा, जो इच्छा, आकांक्षाओं और महत्त्वाकांक्षाओं की राख के नीचे एक मानवीय आग बनकर सुलग रही थी। पूरी रचना के दौरान मैं आज की चुनौतियों के बीच अपने को कृष्ण की साझीदार पाती रही हूँ। हास–उल्लास के क्षणों से लेकर महाभारत के महासंहार तक के प्रकरण के बीच, केलि–कुंजों से लेकर प्रभास–तीर्थ तक की यात्रा के बीच। शायद साझीदारी के इस एहसास ने ही मुझे स्थूल कथा सूत्रों से बचाकर चेतना के स्तर पर कृष्ण से जोड़ा है, कृष्णधर्मा बनाया है।''[3]

अब इन विचारों के आधार पर यदि खेतान की विचारधाराओं का आकलन किया जाये तो कहीं न कहीं महादेवी वर्मा, मीराबाई की पंक्ति में खड़ी होती नजर आती हैं। सबसे पहले महादेवी वर्मा की कविताओं के आधार पर यदि देखें तो महादेवी वर्मा अज्ञात, अदृश्य प्रियतम की बाट जोहती हैं, ''मिलन का मत नाम ले विरह में मैं चिर हूँ।''[4] निरन्तर विरह में ही रहना चाहती हैं। कभी कहती हैं– 'रहने दो हे देव, मेरा यह मिटने का अधिकार'। महादेवी वर्मा भी दर्शनशास्त्र में एम0ए0 और प्रभा खेतान भी दर्शनशास्त्र में एम0ए0 और पी–एच0डी0। सोचने का अंदाज भी अनूठा। महादेवी भी जिस प्रेम की, विरह की, पीड़ा की बात करती हैं, वह अद्भुत है। वैसी कल्पना इससे पूर्व किसी कवि या कवयित्री की भावना में, भक्ति में नहीं मिलती है। महादेवी के जीवन में पीड़ा का या प्रणय के बन्धन का बहुत महत्त्व है–

''इन ललचाई पलकों पर, पहरा जब था व्रीड़ा का।
साम्राज्य मुझे दे डाला, उस चितवन ने पीड़ा का।''[5]

या जब कहती हैं–

''बिछाती थी सपनों के जाल, तुम्हारी वह करूणा की कोर।
गई वह अधरों की मुस्कान, मुझे मधुमय पीड़ा में बोर।''[6]

अपने अस्तित्व को बचाये रखने की कामना के साथ कहती हैं–

पर शेष नहीं होगी यह मेरे प्राणों की क्रीड़ा।
तुमको पीड़ा में ढूँढ़ा तुम में ढूँढूगी पीड़ा।।[7]

निर्गुण, निराकार प्रियतम को ढूँढ़ते–ढूँढ़ते कब उन्हें मुरली की तान सुनाई देने लगती है–

मूक प्रणय से, मधुर व्यथा से, स्वप्न लोक आह्वान।
वे आए चुपचाप सुनाने, तब मधुमय मुरली की तान।
अलक्षित का किसने चुपचाप सुना अपनी सम्मोहन तान।
दिखाकर माया का साम्राज्य बना डाला इसको अज्ञान।।[8]

मुरली की तान का बजना, उससे आकर्षित होना, बाँसुरी बजाकर गोपियों को सम्मोहित करने वाले कृष्ण की, कन्हैया की याद दिलाता है। किन्तु महादेवी जी कृष्ण भक्त नहीं थीं। पर यह जरूर है कि हिन्दी साहित्य जगत में उनकी प्रीति की रीति भी अपने आप में निराली है। आत्मा–परमात्मा के दर्शन में डूबते–डूबते शायद इस अनोखे प्रेम का एहसास होता है। अपने समय में महादेवी जी ने अपने अस्तित्व के आगे कोई समझौता नहीं किया। अपने सम्मान और स्वाभिमान के साथ आध्यात्म के राह पर अकेले चलते हुए पीड़ा के साम्राज्य में डूबी रहीं। महादेवी जी प्रणय की बात करते–करते अध्यात्म का आश्रय ग्रहण करती हैं। प्रभा खेतान जी इस सांसारिक जगत में रहते हुए भी जिस तरह अपनी कविता के माध्यम से अपने को 'कृष्णधर्मा' घोषित करती हैं, वह समर्पण की राह पर ले जाता है। जिसमें समर्पण एकतरफा है। प्रभा जी सब कुछ समर्पित कर देती हैं। लेकिन उन्हें उस समर्पण के बाद हासिल क्या होता है। इसका आकलन वह स्वयं अपनी आत्मकथा में करती हैं। पर एक बात में समानता है– वह है अकेले चलने का साहस, निर्भीकता, अपने पथ का निर्माण करने की चेष्टा, भले ही मुक्ति की कामना करते–करते मुक्ति नहीं मिल पायी हो। मीराबाई के संघर्ष करने की ताकत से सभी परिचित हैं। इस संसार से संघर्ष करने के लिए वह भी कृष्ण को ही आश्रय चुनती है और समाज से लोहा लेती हैं।

© RRIJM 2015, All Rights Reserved

अन्ततः कृष्ण की होकर इस संसार से विदा लेती हैं। कहने का तात्पर्य यह कि महिलाओं को अपने ढंग से चाहे सांसारिक प्रेम हो या आध्यात्मिक प्रेम हो, उसकी आजादी नहीं है। उसके लिए उन्हें हर काल में कठोर संघर्ष करना पड़ा है। प्रभा खेतान जिस प्रेम की बात करती हैं, स्त्री के अस्तित्व और उसकी आजादी की बात करती हैं, वह अपनी एक नयी दृष्टि से साहित्य जगत को परिचित कराती हैं। पुरुष प्रधान समाज में जैसा पुरुष सदियों से करता आया है, स्त्री भी उस तरह की स्वतन्त्रता, स्वच्छन्दता की बात सोच सकती है, आने वाली पीढ़यॉं अपनी इस आजादी के लिए संघर्ष करती नजर आयेंगी।

मानवीय संवदेना और विलुप्त होती हुई भावना को जगाने वाला उनका उपन्यास है– 'तालाबन्दी' प्रभा खेतान को व्यापारिक जगत का अच्छा अनुभव था। अपने इन अनुभवों को उन्होंने 'तालाबन्दी' उपन्यास में पिरोया है। ''इस उपन्यास में मारवाड़ी व्यापारिक घरानों की जीवन झॉंकियों को रेखांकित करते हुए प्रभा खेतान यह बताना चाहती हैं कि समय के साथ उनमें भी बदलाव आया है। परम्परात और इस मानसिकता के स्थान पर नयी सोच और इस प्रगतिशीलता ने जन्म लिया है। मानवीय संवेदना का भी संचार हुआ है उनमें। तालाबन्दी में श्याम बाबू के चरित्र से जान जायेंगे कि वह अपने कारखाने की श्रमिक समस्या को हल करने के लिए मार्क्सवाद की शरण में जाते हैं। उनका विचार है कि मार्क्स को समझे बिना भला कोई कैसे निदान ढूँढ़ सकता है। श्यामबाबू का आत्मालाप इस कृति को प्राणवान बनाता है, जो अपने परिवार और कारोबार के घेरों में घिरकर उनसे जूझ रहा होता है। तीसरे स्तर पर श्याम बाबू के इर्द–गिर्द की घटनायें निरन्तर ट्रेड यूनियनों की गतिविधियों के माध्यम से उनके दोहरे चरित्र को भी उद्‌घाटित करती चलती हैं। इसके बीच शेखर दा और मास्टर जी जैसे खॉंटी कम्युनिस्टों के प्रेरक चेहरे भी हैं। कुल मिलाकर तिरोहित होती हुई मानवीय भावना के प्रति आशा और आस्था जगाता है यह उपन्यास।''[9]

प्रभा खेतान की यह विशिष्टता है कि ''रूढ़िवादी समाज की जड़ता को तोड़ते हुए उन्होंने कलकत्ता चैम्बर्स ऑफ कामर्स की एकमात्र महिला अध्यक्ष बनने का गौरव हासिल किया।''[10] प्रभा खेतान के कार्यों एवं रचनाओं से साफ पता चलता है कि परम्पराओं को तोड़ते हुए अकेले राह पर चलने का उनमें कितना साहस था। उसी साहस की उपलब्धि भी व्यापार जगत में उन्हें हासिल हुई। उर्वशी वुटालिया का कथन है– ''प्रभा खेतान एक अद्वितीय स्वर हैं; निर्भीक, वेदनामय, आनन्दित और संवेदनशील...''।[11] प्रभा खेतान अस्तित्ववाद, सार्त्र, अल्बेयर कामू के विचारों से बहुत प्रभावित थीं। यही कारण है कि उन पर उन्होंने पुस्तकें लिखी। अल्बेयर कामू के प्रति अपनी श्रद्धा व्यक्त करते हुए प्रभा खेतान ने 'अल्बेयर कामू : वह पहला आदमी' पुस्तक लिखी। ''यह फ्रेंच लेखक, दार्शनिक और पत्रकार अल्बेयर कामू की साहित्यिक–सांस्कृतिक जीवनी है, जिसे नारीवादी कथाकार और विचारक प्रभा खेतान ने अपनी निजी श्रद्धांजलि के रूप में लिखा है। कामू को अक्सर अस्तित्ववाद से जोड़कर देखा जाता है, पर उनकी विचारधारा बहुत से मायनों में अलग और अपनी थी। कामू गरीबी में पैदा हुए, कठिन परिस्थितियों में जिये, बीमारी, अभाव और अकेलेपन से हमेशा घिरे रहे और अन्त में 'घृणा के बर्फीले तूफानों' के बीच उनकी मृत्यु हुई। फिर भी उनका रचनात्मक अवदान सबसे अनोखा और मोहक है, क्योंकि वे व्यक्ति और मानवता दोनों की ट्रेजडी को समझते थे और उनकी संवेदना आम आदमी की पीड़ा और संघर्ष से जुड़ी रही।''[12] प्रभा खेतान के शब्दों में– ''वास्तव में हृदय से वे ग्रीक थे, भूमध्यसागरीय सभ्यता से प्रभावित थे, इसलिए हम उनमें वही आदिम आवेग और संवेदना पाते हैं जो स्थान और काल की सीमा से परे है।''[13]

प्रभा खेतान की सोच पर इन दार्शनिकों का व्यापक प्रभाव देखा जा सकता है। व्यक्ति अपनी सोच को बदलने के लिए स्वतंत्र है। चेतना के स्तर पर उसकी सोच में बहुत विस्तार हो सकता है। लेकिन समाज की बनी–बनाई परम्पराओं, मान्यताओं से जूझना, चुनौती स्वीकार करना है। प्रभा खेतान इसी शख्शियत की पहचान हैं। 'अन्या से अनन्या' के विषय में शंभुनाथ का मत है कि– ''प्रभा खेतान 'अन्या' हैं, 'दूसरी औरत' हैं और उसी पुरुष के द्वारा हाशिये पर रखी जाती, हैं जिससे वह सबसे ज्यादा प्रेम करती हैं। 'अन्या से अनन्या' स्त्री के हाशिये से केन्द्र में आने की कथा है, जिसमें वह बबूल के कॉंटे चबाकर अपने 'होने' को 'अर्थपूर्ण होने' में रूपान्तरित करती दिखती हैं। पितृसत्ता से विद्रोह करते हुए भी भारतीय स्थितियों में यह स्त्री मुक्ति और विवशता के बीच बहती एक बेचैन नदी है।''[14]

सब प्रकार से सक्षम, सशक्त, शिक्षा से सम्पन्न, धन से सम्पन्न, अपने दम पर अपनी जिन्दगी की दिशा तय करने वाली प्रभा खेतान के समक्ष भारतीय समाज और परिस्थितियों की चुनौतियॉं हैं जिन परिस्थितियों में भारतीय समाज में एक पुरुष बड़े सम्मान से जिन्दगी जी लेता है, उसी परिस्थिति में एक सक्षम स्त्री को किन कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। इसका विशद चित्रण अपनी आत्मकथा में प्रभाखेतान ने स्वयं बड़ी ईमानदारी से किया है। ''उनकी आत्मकथा 'अन्या से अनन्या' ने हिन्दी साहित्य जगत को न सिर्फ अपनी बेबाक ईमानदारी से स्तब्ध किया बल्कि 'हंस' में धारावाहिक रूप में प्रकाशित होने के दौरान शुचितावादियों की तीखी आलोचना की भी शिकार हुईं। एक स्त्री के भावनात्मक द्वन्द को दर्शाने के साथ–साथ उसके आधुनिक मुक्तिकामी अस्तित्व को भी गढ़ती है और इसी क्रम में तत्कालीन राजनीतिक और सामाजिक ढाचे का पड़ताल करती एक साहित्यिक धरोहर बन जाती है।''[15] भारतीय समाज सक्षम से सक्षम स्त्री को भी किस तरह से कठघरे में खड़ा करता है, चेतना के स्तर पर उसकी उच्च से भी उच्च भावना को मसलकर किस तरह रौंदने का

© RRIJM 2015, All Rights Reserved

कठोर प्रयास करता है। प्रभा खेतान की आत्मकथा से इस बात का अनुमान लगाया जा सकता है। ''एक प्रतिष्ठित लेकिन विवाहित डाक्टर से स्त्री के प्रेम को समाज किस तरह कठधरे में खड़ा करता है, इसका कटु दंश झेलते हुए कोई स्त्री स्याह और सफेद से बाहर अपनी नैतिकता किस तरह करूणा और विद्रोह के धागों से गढ़ती है, इसके बेबाक बिम्ब हैं प्रभा खेतान की इस आत्मकथा में। इसमें जैसे एक सभ्यता खुद चौराहे पर अपने कपड़े उतार रही हो। इसमें स्त्री अपने सदियों के भयों के साथ है तो मुक्त होकर जीने के साहस के साथ भी।''[16]

प्रभा खेतान साहितियक जगत में विशेष रूप से अपनी आत्मकथा– 'अन्या से अनन्या' के लिए जानी जाती है। प्रभा जी ने ऐसा क्या लिख दिया है जो अन्य किसी की आत्मकथाओं में नजर नहीं आता। लोग बहुत रस लेकर उनकी आत्मकथा को पढ़ते हैं यूँ कहिये 'अन्या से अनन्या' के जरिये ही प्रभा खेतान को विशिष्ट पहचान बनी। उनकी आत्मकथा खुलकर पुरूषों से चुनौती स्वीकार करती हुई कथा है। जो कार्य समाज में आम पुरूष करता हुआ जीवन जी लेता है, सम्मान का भागीदार भी बना रहता है, अगर वही स्त्री करे तो समाज को आपत्ति क्यों? तब नैतिकता का प्रश्न कहाँ से खड़ा हो जाता है? औरत जैसे पुरूष के लिए जीती है (अंकुठ एकनिष्ठ समर्पण को जमीन पर संवेदना की तरलता से सिंचित इकाई के रूप में), पुरूष भी क्यों नहीं औरत के लिए जी पाता।''[17] स्त्री है अन्या घर में, समाज में, सम्बन्धों में। स्वयं अपना 'सर्वस्व' बनने के लिए घूँट–घूँट जहर पीते रहना पड़ता है उसे। प्रभा खेतान जी मानती हैं कि– ''स्त्री होना कोई अपराध नहीं है, पर नारीत्व की आँसू भरी नियति स्वीकार करना बहुत बड़ा अपराध है।''[18] वह जिन्दगी को अपने तरीके से देखती हैं। समाज के बन्धन उन्हें स्वीकार नहीं। दूसरों की परवाह करना तो उन्होंने सीखा ही नहीं। बस प्रेम करना जाना। दीये की तरह जलता रहे। ''क्या दूसरों की कसौटियों पर खरा उतरने की चिन्ता ही साधना है? न, साधना अन्धानुकरण तो बिल्कुल नहीं, बल्कि, व्यक्ति, सम्बन्ध निर्णय और स्वाभिमान को सही परिप्रेक्ष्य में देखने और रखने की मनुष्यता है। इसलिए ''साधक होने की क्षमता उसी व्यक्ति में रहती है जो अनुशासन में बँधे, श्रम करे, एकोन्मुखी अग्नि की तरह जले, जलता रहे।''[19] 'अन्या से अनन्या'' एक ऐसी कहानी है जिसमें नायिका बाईस वर्षीया अविवाहित प्रभा खेतान हैं और नायक चालीस वर्षीय विवाहित अधेड़ उम्र, पाँच बच्चों के पिता डॉ0 सर्राफ। ऐसी प्रेम कहानियों में समाज की बहुत दिलचस्पी होती है। लेकिन जितना ही समाज की दिलचस्पी होती है, दखलंदाजी होती है, उतना ही ऐसे प्रेमी युगल दुनिया की पहरवाह भी नहीं करते हैं। समाज में ऐसे सम्बन्धों का पाया जाना अपवाद स्वरूप ही होता है। प्रभा खेतान समाज के लिए अपवाद ही बनती हैं। एक ऐसा प्रेम सम्बन्ध जो न तो विवाह बन्धन को ही स्वीकार करता है, न कामना का आवेग उतरते ही समाप्त हो जाता है, वरन् डा0 सराफ की मृत्युपर्यन्त आजीवन पूरे अट्ठाईस वर्ष तक समर्पित रहता है। प्रभा जी कहती हैं– ''अपने निर्णय पर मैं पछताने वाली नहीं, जो आप नहीं दे सकते, उसकी मुझे जरूरत नहीं, कि मुझे समाज की चिन्ता नहीं, कि 'मेरी राय में विवाह एक ओवररेटेड संस्था है। मैं इस संस्था को ज्यादा तरजीह देने से इन्कार करती हूँ।''[20] इस तरह के स्वतन्त्र ख्यालों, विचारों वाली प्रभा खेतान की प्रथम मुलाकात डॉ0 सर्राफ के साथ विदेशयात्रा से शुरू होती है। फिर अपने जीवन के बारे में खुलकर वर्णन करती हैं। जन्म, बचपन, मारवाड़ी परिवार की पाबन्दियाँ, इन सबके बीच असमय पिता का निधन, माँ का रंग साँवला होने के कारण माँ की अवहेलना, किन्तु आर्थिक तंगी आने पर माँ का परिवार की बागडोर सँभालना, इसी बीच अमेरिकी यात्रा के दौरान डॉ0 सर्राफ से प्रेम का हो जाना आदि का यथातथ्य विवरण प्रस्तुत करती हैं। प्रभा खेतान एक ऐसी शख्शियत है जो समाज से डरती नहीं। खुलकर अपने और डा0 सर्राफ के बीच प्रेम सम्बन्धों का वर्णन करती हैं। व्यवसाय जगत से जुड़ना और अन्त तक मृत्यु पर्यन्त डॉ0 सर्राफ की होकर रहना उनके प्रेम की ताकत को दर्शाता है। डाक्टर सर्राफ की मृत्यु तथा अन्तिम यात्रा के साथ आत्मकथा का अन्त होता है। यथार्थवाद, की जीती हुई जागती मिशाल हैं प्रभा खेतान। ''लेखन के जरिये लड़ो दिखाओ कि तुम लड़ रहे हो, ऊर्जस्वी यथार्थवाद! यथार्थ तुम्हारे पक्ष में है, तुम भी यथार्थ के पक्ष में खड़े हो। जीवन को बोलने दो। इसकी अवहेलना मत करो।''[21] इसको चरितार्थ करती हुई वैचारिक क्रान्ति का उद्घोष करती हैं। 'अन्या से अनन्या' में यदि एक तरफ आत्म का विसर्जन है तो दूसरी तरफ का संरक्षण, संवर्धन भी है जो उसे आगे की जीवनीशक्ति देता है। जीवन के प्रति आस्थावान बनाता है। प्रभा जी को भारतीय पुरूष प्रधान संस्कृति का बहुत गहरा ज्ञान था इसके बावजूद परम्परा से विद्रोह करती हुई, वैवाहिक संस्था को चुनौती देती हुई अपने वजूद को तलाशती हैं। ऊर्जा से भरती हैं। सामाजिक नजरिया भले ही डा0 सर्राफ और उनके प्रेम सम्बन्धों में देह को प्रमुख मानता हो, परन्तु उनका विचार इससे ऊपर था। ''प्रेम से ज्यादा महती भावना है एक–दूसरे के प्रति मानवीय लगाव एवं करूणा। हम एक दूसरे को इसलिए बचाना चाहेंगे क्योंकि हम खुद जिन्दा रहना चाहते हैं।''[22] डा0 प्रभा खेतान स्वयं अपने लिए तथा समाज के लिए यह यक्ष प्रश्न खड़ा करती हैं कि जब वह स्वयं समर्थ, स्वतंत्र, सक्षम, दर्शनशास्त्र की विद्वान, कुशल व्यवसायी महिला थीं, तो सब कुछ सामाजिक ताने–बाने को जानते हुए भी एक विवाहित पुरुष की रखैल बनना क्यों स्वीकार करती हैं? क्या रखैल बनने में ही सारी स्वाधीनता की जड़ें हैं। यह कैसी स्वतंत्रता है? दर्शनशास्त्र का ज्ञान उन्हें वहाँ से कहाँ पहुँचाता है? वे स्वयं से सवाल करती हैं और उनका प्रश्न भी अनुत्तरित ही रह जाता है। वे कहती हैं– ''मैं क्या लगती थी डॉक्टर साहब की? मैं क्यों ऐसे ही उनके साथ चली आयी? प्रियतमा, मिस्ट्रेस शायद आधी पत्नी, पूरी पत्नी तो मैं कभी नहीं बन सकती,

© RRIJM 2015, All Rights Reserved

क्योंकि एक पत्नी तो पहले से ही मौजूद थी। वे बाल बच्चों वाले व्यक्ति थे। पिछले सालों से मैं उनके साथ थी मगर किस रूप में? इस रिश्ते को नाम नहीं दे पाऊँगी।'' सारे प्रश्नों की गुत्थियों को सुलझाती हुई स्वयं उस सामाजिक ताने–बाने में, उलझे हुए धागे में उलझ कर रह जाती हैं। जिस सामाजिक संरचना का हिस्सा नहीं बनना चाहती, स्वतंत्र, उन्मुक्त, देहातीत प्रेम का पर्याय बनकर जीना चाहती हैं, उसमें सब कुछ एक साथ कैसे हासिल हो सकता है। एक ही सत्य, एक ही अनुभव आपके हाथ आ सकता है। एक ही विकल्प हो सकता है सामाजिक संरचना के भीतर घुसकर अपनी स्वतंत्र पहचान, अस्मिता, स्थान को सुनिश्चित करना। जो महिला इतना संघर्ष कर सकती है, उसके लिए कुछ भी असंभव नहीं। वह अपने लिए बौद्धिकता के साथ–साथ परिवार में, समाज में अपना स्थान भी अक्षुण्ण रख सकती है। हमारे समाज का यह भी एक पक्ष है जो प्रभा खेतान ने रेखांकित किया है। प्रबुद्ध से प्रबुद्ध, सक्षम, सुयोग्य, सौन्दर्य की प्रतिमूर्ति महिलाओं ने भी यह मार्ग चुना है इसमें फिल्मी जगत की सिने तारिका हेमा मालिनी, करीना कपूर खान का नाम लिया जा सकता है। अपने जमाने में हेमा मालिनी के समक्ष विवाह के लिए विकल्पों की कमी नहीं थी, पूरी लाइन लगी हुई थी पुरूषों की जिसमें विवाहित, अविवाहित सभी शामिल थे, लेकिन उन्होंने चुना धर्मेन्द्र को। जो स्वयं पहले प्रकाश कौर के साथ प्रेम विवाह कर चुके थे और दो पुत्र भी थे। फिर भी समाज में सदियों से ऐसा होता आया है। समाज के एक पक्ष का यह भी सत्य उद्घाटित हुआ है इस आत्मकथा के माध्यम से। हेमा मालिनी को कहीं अफसोस नहीं है अपितु अपने प्रेम पर उनको गर्व की अनुभूति होती है, पर दर्द जानना है तो प्रकाश कौर से पूछिए। या ऐसी महिलाओं से पूछिये जो इसका दूसरा पक्ष हैं, जीवन की दूसरी पहलू हैं। उन पर भी विचार करने की जरूरत है। यद्यपि दूसरी पत्नी होने का दर्द, दर्प एवं दंश कहीं न कहीं समस्त प्रकार से सक्षम हेमामालिनी को भी सालता है। यह औरत का दर्द है, औरत ही समझती है। जिसके पाँव में काँटा चुभता है, दर्द उसी को होता है। सर्वसाधारणीकरण की यह प्रक्रिया है। दुःख सबको माँजता है, संवारता है, गिरकर उठने की शक्ति देता है। नीचे से नीचे पीड़ा की अटल गहराई में डूबकर भी औरत उससे जूझकर बाहर निकलना जानती है। दर्द का रूप अलग हो सकता है, स्वरूप अलग हो सकता है लेकिन हर दर्द जीवन की गहरी सीख भी देता है। औरत जहाँ सशक्त हुई है उसे अपनी शक्ति को पहचानना होगा, जहाँ उसकी कमियाँ हैं, उसे दूर भी करना होगा।

प्रभा खेतान के जीवन संघर्ष की दास्तान उन्हें अनूठा बनाती है। उनकी सोच स्त्री की सोच को नया आयाम देती है। सच को स्वीकार करने की, संघर्ष करने की चेतना जगाती है। जीवन में प्रेम का एक कोण, एक दृष्टि यह भी हो सकती है जो प्रभा खेतान ने प्रस्तुत किया है। यह मिसाल अपने आप में अनूठी है। जहाँ प्रेम में सर्वस्व समर्पण है और लेने की कोई चाह नहीं है। सांसारिक दृष्टि से यह भौतिक प्रेम की श्रेणी में परिगणित किया जा सकता है परन्तु दर्शन के स्तर पर, बौद्धिकता के स्तर पर शरीर प्रेम से अलग बौद्धिक प्रेम कहा जायेगा। चेतना के स्तर पर इस प्रेम का प्रतिफलन घटित होता है। यह ही इस प्रेम का अनूठापन है, अनूठा प्रेम है, अनूठे प्रेम की मिसाल है।

संदर्भ सूची–

1. प्रभा खेतान, अपरिचित उजाले, www.vaniprakashan.in/details.
2. प्रभा खेतान, अहल्या, www.vaniprakashan.in/details
3. प्रभा खेतान, कृष्णधर्मा मैं, www.vaniprakashan.in/details.
4. गुप्त, डा0 गणपति चन्द्र, साहित्यिक निबन्ध, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पृ0 775
5. वही, पृ0 772
6. वही, पृ0 772
8. वही, पृ0 772
9. प्रभा खेतान, तालाबन्दी, www.vaniprakashan.in/details.
10. प्रभा खेतान, अन्या से अनन्या, कवर पृष्ठ पर अंकित, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली।
11. वही, मुख पृष्ठ पर अंकित
12. प्रभा खेतान, अल्बेयर कामू www.vaniprakashan.in/details
13. वही
14. प्रभा खेतान, अन्या से अनन्या, कवर पृष्ठ पर अंकित, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली।
15. वही
16. वही
17. प्रभा खेतान, अन्या से अनन्या, पृ0 223
18. वही, पृ0 63
19. वही, 202
20. वही, 85
21. बर्टोल्ड ब्रेख्त, थीसिस फार प्रोलितेरियन लिटरेचर
22. प्रभा खेतान, अन्या से अनन्या, पृ0 254

© RRIJM 2015, All Rights Reserved